रत्नकुमार कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना

Ratnakumar Sambhariya ki Kahaniyo Mein Abhivyakth Dalit Chetana

मंगलूर विश्वविद्यालय

की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

**THESIS SUBMITTED TO
MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI**

शोधनिर्देशिका

डॉ. सुमा टी. रोडनवर

संयोजिका, स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन
एवं अनुसंधान केन्द्र
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु
मंगलूरु – 575001

Research Guide

Dr Suma T. Rodanwar

Co-ordinator
Dept of Postgraduate Studies
and Research in Hindi
University College Mangaluru
Mangaluru - 575001

शोधार्थी

रेखा के एस.

अनुक्रमांक: 154968530
हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु
मंगलूरु – 575001

Researcher

Rekha K.S.

Reg. No. 154968530
Department of Hindi
University College
Mangaluru
Mangaluru - 575001

: अनुसंधान केंद्र :

स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र

विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलूरु, मंगलूर विश्वविद्यालय

**DEPARTMENT OF POSTGRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY**

2021

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना
Ratnakumar Sambhariya ki Kahaniyo Mein Abhivyakth Dalit Chetana

प्रस्तावना:

हिन्दी दलित कहानी की शुरुआत आठवें दशक में हुई। हिन्दी दलित कहानी में साहित्य के अन्य विधा की अपेक्षाकृत ज्यादा विरोध प्रतिरोध का तेवर मुखर हुआ है। जिसमें दलित समाज की सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण के साथ दलित समाज में एक नई उम्मीद, नई भाव-संवेदना का वितान दिखाई देता है।

दलित साहित्य के विकास क्रम में एक भरी पूरी पीढ़ी दिखाई पड़ती है। जिसमें ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान, रजतरानी मीनू आदि कथाकार विरोध-प्रतिरोध का साहित्य रचते दिखाई देते हैं। जिन्होंने दलितों की संवेदना, उनकी वेदना को चेतना के धरातल पर साहित्य सृजन किया।

दलित साहित्य में समय के साथ-साथ परिवर्तन को भी देख सकते हैं। दलित साहित्यकारों के प्रथम पीढ़ी में शोषक या सवर्णों के प्रति विद्रोही भाव तो दिखाई देता है परन्तु अधिकतर वह मौन विद्रोह था। जैसे-जैसे दलित साहित्य की सीमा बढ़ती गई उनकी वाणी में भी वह तीव्रता व चेतना के प्रति आवाज़ तीक्ष्ण होती गई। इस दिशा में अनेक साहित्यकार अपने समाज तथा दलितों की उद्धार व प्रगति के लिए सृजनरत है।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य

'राख ही जानता है जलने का दर्द' – इस कथन के साथ दलित साहित्य के संबंध में उपजी स्वानुभूति और सहानुभूति के विचार में स्वानुभूति ही अधिक मान्य है । सदियों के जिस पीड़ा, यातना से दलित समाज मुक्ति के लिए छटपटा रहा था, उसी समय दलित उद्धारक के रूप में कई महापुरुष ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले, साहु महाराज, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महापुरुषों ने दलित समाज के उद्धार के लिए अपना योगदान दिए । फलस्वरूप अनेक हिन्दी दलित साहित्यकारों ने मराठी साहित्य से प्रेरित होकर साहित्य सृजन में कार्यरत हुए । जिनका मुख्य उद्देश्य अपनी तथा अपनी समाज की पीड़ा, यातनाओं को वाणी देते हुए खोई हुई अपनी अस्मिता को प्राप्त करना था । इस दिशा में अनेक हिन्दी दलित साहित्यकार जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम आदि अनेक रचनाकारों ने साहित्य के सभी विधाओं में साहित्य सृजन करने लगे । दलितों के अधिकार, दलित समाज के विकास के लिए अपना योगदान दिए ।

दलित साहित्य मानव मुक्ति का साहित्य है । जिसका परिचय तथा अध्ययन करने का अवसर मुझे स्नातकोत्तर करते प्राप्त हुआ । मैं स्वयं दलित समाज से हूँ । इसी कारण दलित साहित्य में व्यक्त दलितों की संवेदनाओं को महसूस कर पा रही हूँ । अतः मेरे मन में दलित साहित्य के प्रति रुचि बढ़ती गई । जब मुझे पीएच.डी. करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो मेरे दलित साहित्य के प्रति रुचि को एक अध्ययन प्रारूप देने का अवसर प्राप्त हुआ । मेरे गुरु व मार्गदर्शिका, डॉ. सुमा टी. रोडनवर के मार्गदर्शन में मैंने दलित साहित्य

को अपने शोधप्रबण्ध का विषय चुना। मेरे शोध का विषय है – **“रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना”।**

मेरे यह शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य दलित समाज की समस्याओं को पहचानना तथा दलितों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना है। रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों को पढ़ना ही मन में शोषण के विरुद्ध चेतना भाव को प्रकट करती है। उनकी कहानियों को पढ़कर मेरे मन में अनेक विचार तथा प्रश्न उभरे साथ ही उन प्रश्नों का समाधान प्राप्त करने में सहायता भी प्राप्त हुई।

इस शोध प्रबंध ने मेरे अंदर एक नयी सोच, नए विचार तथा अपने समाज के प्रति मेरी जिम्मेदारियों को स्पष्ट कर दिया है जो मैं इस शोध प्रबंध की सार्थकता ही मानूँगी।

शोध कार्य की पद्धतियाँ

मानव मन की मूल प्रवृत्ति जिज्ञासा है । जिसके कारण मानव नित्य नई-नई खोज करता रहता है । वह तर्कशील और विवेकयुक्त प्राणी होने के कारण जिज्ञासाओं से संबद्ध क्षेत्र में नए-नए अन्वेषण करता रहता है । इसी अन्वेषण प्रक्रिया को अनुसंधान कहा जाता है । जिसकी अनेक पद्धतियाँ हैं जैसे – (1) वर्णनात्मक पद्धति (2) विश्लेषणात्मक पद्धति (3) तुलनात्मक पद्धति (4) भाषावैज्ञानिक पद्धति आदि ।

इन अनुसंधान पद्धतियों में से विश्लेषणात्मक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति तथा भाषा वैज्ञानिक पद्धतियों को मैंने अपने शोध कार्य में अनुसरण किया है ।

(1) विश्लेषणात्मक पद्धति

प्रस्तुत शोध कार्य में रत्नकुमार सांभरिया का समग्र साहित्य का अध्ययन करते हुए उनकी दलित कहानियों का विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए शोध कार्य किया गया है ।

रत्नकुमार सांभरिया का साहित्य अत्यंत समृद्ध है । सांभरिया ने दलित समाज के सभी समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान देने के साथ-साथ दलित समाज में चेतना का नई ऊर्जा को जातृत किया है । उनकी कहानियों का विश्लेषणात्मक पद्धति के प्रयोग कर शोध कार्य किया गया है ।

(2) तुलनात्मक पद्धति

समकालीन हिन्दी दलित साहित्यकारों में रत्नकुमार सांभरिया का अपना एक विशेष स्थान है । इन्होंने दलित साहित्य की बनी बनाई नियमों से आगे बढ़कर दलित समाज के साथ अन्य पिछड़े समुदाय को भी अपने साहित्य में स्थान दिया है ।

मैंने अपने पंचम अध्याय में समकालीन हिन्दी कहानिकारों और रत्नकुमार सांभरिया के कहानियों की विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है ।

(3) भाषा वैज्ञानिक पद्धति

भाषा विज्ञान, भाषा की संरचना और उसके स्वरूप का विश्लेषक विज्ञान है । जिसमें साहित्य में प्रयुक्त भाषा में निहित अर्थों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन होता है ।

प्रस्तुत शोध कार्य में लेखक के साहित्यिक भाषा स्थानीय क्षेत्र की भाषा, बोली आदि का अध्ययन भाषा वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार किया गया है ।

शोध विषय की सीमा एवं व्याप्ति

पूरी दुनिया ज्ञान का भंडार है । परंतु वह बिखरा पड़ा है । उस ज्ञान को व्यवस्थापूर्वक सिद्ध करने के लिए शोध कार्य किया जाता है । जिसका कोई सीमा एवं व्याप्ति नहीं होता ।

रत्नकुमार हिन्दी दलित साहित्यकारों में अपना विशेष स्थान रखते हैं । उनका रचना-संसार अत्यंत समृद्ध है । अब तक उनके पाँच कहानी संग्रह, दो लघु कथा संग्रह,

तीन नाटक, एकांकी आदि प्रकाशित हुए हैं। इनके रचनाओं पर शोध कार्य भी किए जा रहे हैं।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में परंपरागत दलित साहित्य से आगे बढ़कर व्यथा-वेदना के स्थान पर नयापन को स्थान दिया है। इनकी कहानियाँ दलितों में सकारात्मक एवं नवीन ऊर्जा का संदेश देती हैं। जो मानसिक संघर्ष तथा सामाजिक संघर्ष के लिए प्रेरणा देती हैं। उनकी कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना का अध्ययन करना ही इस शोध की सीमा एवं व्याप्ति है।

कार्य का विभाजन

विषय की समग्रता को ध्यान में रखते हुए इस शोध प्रबंध को सात अध्यायों में बाँटा गया है जो इस प्रकार है –

प्रथम अध्याय – दलित: अवधारणा एवं स्वरूप

द्वितीय अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का कथ्य विश्लेषण

तृतीय अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक और राजनीतिक चेतना

चतुर्थ अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक और धार्मिक चेतना

पंचम अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना

षष्ठम अध्याय – समकालीन हिन्दी दलित कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ

सप्तम अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषाशैली

उपसंहार

परिशिष्ठ – 1 - रत्नकुमार सांभरिया का व्यक्तित्व और कृतित्व

परिशिष्ठ – 2 - संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रथम अध्याय – दलित: अवधारणा एवं स्वरूप

इस अध्याय में दलित साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करने का उपक्रम किया गया है । दलित शब्द को अनेक विद्वान तथा साहित्यकारों ने परिभाषित किया है । ‘दलित’ शब्द को लेकर अनेक विद्वानों में मतभेद व्यक्त हुए है । जिसका अध्ययन इस अध्याय में किया गया है । जिसमें ‘दलित’ शब्द की परिभाषाएँ तथा दलित साहित्य के परिभाषाओं के साथ दलित साहित्य किसे कहा जाए इसका अध्ययन किया गया है ।

अतः दलित साहित्य की स्वरूप तथा विकास का अध्ययन किया गया है । जिसे सिंधु घाटी – हडप्पा संस्कृति, ऋग्वेद काल, वैदिक युग, उत्तर वैदिक युग, बौद्ध युग, मध्यकाल, आधुनिक काल आदि रूप में विभाजित कर अध्ययन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का कथ्य विश्लेषण

रत्नकुमार सांभरिया समकालीन दलित साहित्यकारों में अपना विशेष स्थान रखते हैं । वे ‘चेतना युग’ के समर्थक भी माने जाते हैं । उनके साहित्य का अध्ययन करने

के लिए इस अध्याय को लघुकथा, कहानी विधा में विभाजित कर अध्ययन किया गया है ।

रत्नकुमार सांभरिया दलित परिवार से संबंध रखने के कारण जिन अनुभव तथा स्वानुभूति की अपेक्षा दलित साहित्य में किया जा रहा है । वह रत्नकुमार सांभरिया की साहित्य में देखने को मिलता है ।

इस अध्याय में मैंने रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों का कथ्य विश्लेषण किया गया है । जैसे सामाजिक समस्याओं पर आधारित कहानियाँ, स्त्री अस्मिता की कहानियाँ, विकलांग समस्याओं पर आधारित कहानियाँ, दलित जीवन, चेतना तथा संघर्ष की कहानियाँ आदि । रत्नकुमार सांभरिया के लघुकथाओं का विश्लेषण किया गया है ।

तृतीय अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में सामाजिक और राजनैतिक चेतना

इस अध्याय में रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक और राजनैतिक चेतना का अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया है । जिसमें दलित समाज को राजनीतिक रूप में दुरुपयोग करने वाले सवर्णों की सोच तथा राजनीतिक अधिकार पाकर दलितों का अत्याचार्य, शोषण करनेवालों के प्रति आक्रोश तथा विद्रोही भाव देखने को मिलता है । सामाजिक रूप में दलितों को जाति के नाम पर दबानेवाले सवर्णों की सोच का विरोध वे शिक्षा पाकर ऊँचे पद पाकर करने लगे हैं । दलित नारी जो दलितों में भी दलित कही जाती है । समय आने पर चंडी का रूप भी धारण कर अत्याचारी पर टूट पड़ती है । रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में दलित नारी अत्यंत सशक्त रूप में दिखाई देती है । यह स्त्री पात्र दलित चेतना के अप्रिचायक है ।

चतुर्थ अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में आर्थिक और धार्मिक चेतना

दलित जो सदियों से दमित, प्रताड़ित, शोषित समाज जिन्हें मानव समाज की हर अधिकार, सुविधाओं से वंचित रखा गया है। वह दलित समाज आज जागृत हो गया है। अब दलित अन्याय और शोषण को अपना नियती न मानकर उसका विरोध करने लग गए हैं। जो दलित समाज में आई शिक्षा क्रांति का प्रभाव है। जिससे दलित शिक्षित होकर अपने अधिकारों को पहचानकर उसके लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं।

हिन्दी दलित साहित्य में अनेक गैर और दलित साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई। दलित साहित्य का लक्ष्य 'हम भी इन्सान हैं' इस विचार से प्रारंभ होकर अपने समाज को जागृत करना है। इस दिशा में अनेक साहित्यकार मराठी दलित साहित्य से प्रभावित होकर हिन्दी में साहित्य की रचना करने लगे हैं। ऐसे साहित्यकारों में एक है रत्नकुमार सांभरिया।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ डॉ. बाबा सहेब अम्बेडकर के विचारों को आत्मसात कर दलित साहित्य की लक्ष्य को प्राप्त करती हुई प्रतीत होती है। इनकी कहानियाँ दलित साहित्य की लकीर से आगे बढ़कर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं।

इस अध्याय में रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त आर्थिक तथा धार्मिक चेतना का विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में अभिव्यक्त दलित चेतना

दलित साहित्य मानव मुक्ति का साहित्य है । दलित साहित्य भारतीय समाज को मानवीय मूल्यों के प्रति सजग बनाता है । सामाजिक चेतना एवं परिवर्तन की दिशा दिखानेवाला यह साहित्य नव समाज की स्थापना करने का प्रयास करता है ।

आज दलित साहित्य हिन्दी धारा में अपनी महत्वपूर्ण पहचान एवं स्थान बनाने में कामयाब हो पाया है । वैश्विक मंच पर भी दलित साहित्य की चर्चा हो रही है ।

हिन्दी दलित कहानीकारों में रत्नकुमार सांभरिया का प्रमुख स्थान है । रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ अम्बेडकरवादी विचारधारा को लेकर चलती हैं । उनकी कहानियाँ दलित समाज में आए शैक्षिक सुधार तथा सामाजिक विकास को रेखांकित करती हैं ।

षष्ठम अध्याय – समकालीन हिन्दी दलित कहानीकार और रत्नकुमार सांभरिया की कहानियाँ

हिन्दी दलित साहित्य आज जिस मुकाम को प्राप्त किया है, वह लेखकों की विविधता के कारण से है । अनेक साहित्यकारों ने अपनी साहित्य सृजन के माध्यम से समाज के विभिन्न समस्याओं को उकेरने का काम किया है ।

इस अध्याय में हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों के कहानियों का विश्लेषण का अध्ययन किया गया है । जिसमें हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान, सुशीला ठाकभौरे, रजतरानी मीनू के कहानियों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया है । तथा समकालीन

दलित कहानिकारों में अपने अलग पहचान बनानेवाले रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की विश्लेशण कर उन्हें तथा उनके कहानियों का विश्लेषण किया गया है ।

सप्तम अध्याय – रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की भाषाशैली

भाषा एक ऐसी वस्तु है जिसके माध्यम से भाव तथा विचारों का आदान-प्रदान होता है । मनुष्य हरेक काम भाषा के माध्यम से संपन्न कराता है ।

हिन्दी साहित्य का सौंदर्यशास्त्र संस्कृत और पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र पर आधारित है । परन्तु हिन्दी दलित साहित्य परंपरागत साहित्य के सौंदर्यशास्त्र से भिन्न अपना सौंदर्यशास्त्र बनाया है जो परिवर्तनशीलता के निमयों में विश्वास करता है ।

दलित साहित्य को वह लिखता है जो यथार्थ की ज़मीन पर खड़ा है । इसीलिए उसकी भाषा कुलीन नहीं है । दलित साहित्य की भाषा कुलीन भाषा न होकर जनसामान्य की या दलितों की जीवन संग्राम की भाषा है, जिसमें उनके मानसिक स्थिति और अनुभव की यथार्थता का अभिव्यक्ति रहती है ।

इस अध्याय में रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में प्रयुक्त भाषागत वैशिष्टता का अध्ययन किया गया है । जिसे सर्वप्रथम दलित साहित्य की भाषा के संबंध में व्यक्त विद्वानों के मतभेद पर प्रकाश डाला गया है ।

रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ जैसे बिंब, प्रतीक सादृश्य विधान, शैली में – वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, संवादात्मक तथा आत्मकथात्मक शैली पर अध्ययन किया गया है । इसके साथ कहानियों में प्रयुक्त मुहावरे, लोकोक्तियों पर भी अध्ययन किया गया है ।

उपसंहार: दलित चेतना से आशय दलितों को यह अहसास दिलाना की हम भी मनुष्य है । दलित साहित्य का मुख्य उद्देश्य समाज में समता, समानता व बंधुत्व की स्थापना है । दलित साहित्य किसी भी तरह के अमानवीय भेदभाव के खिलाफ है तथा दलित, शोषित उत्पीड़ित जनता के पक्ष में खड़ा है । अनेक चुनौतियों को पार करते हुए आज दलित साहित्य मजबूती से अपने पैर पर खड़ा है ।

हिन्दी दलित कहानी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है । दलित कहानी को अंबेडकरवादी कहानी भी कहा जाता है । जिस कहानी की प्रवृत्ति एवं रूपबंध में चेतनामूलक क्षमता होगी, वही कहानी दलित कहानी होने का सेहरा बंधवा पाएगी । दलित कहानी में यह आवश्यक है कि उसमें गहरी संवेदना, दलित के प्रति दर्द और जागृति का भाव हो, जो दलित कहानी की धड़कन है । आज दलित कहानियाँ बहुत लिखी जा रही है । नए-नए दलित कहानीकार अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहे हैं । जिनसे उम्मीद बंधती है कि दलित कथायात्रा निश्चय ही समृद्धि तक अतिशीघ्र पहुँच जाएगी ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
1	हुक्म की दुग्गी	रत्नकुमार सांभरिया	रचना प्रकाशन, जयपुर 2003
2	काल तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)	रत्नकुमार सांभरिया	रचना प्रकाशन, जयपुर 2004
3	खेत तथा अन्य कहानियाँ (कहानी संग्रह)	रत्नकुमार सांभरिया	आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा 2011
4	दलित समाज की कहानियाँ (कहानी संग्रह)	रत्नकुमार सांभरिया	अनामिका पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली 2011
5	वीमा (नाटक)	रत्नकुमार सांभरिया	अनामिका पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली 2012
6	उजास (नाटक)	रत्नकुमार सांभरिया	लोकमित्र, शाहदरा, दिल्ली 2014
7	एयरगन का घोड़ा (कहानी संग्रह)	रत्नकुमार सांभरिया	अनामिका पब्लिशर्स, दरियागंज, नई दिल्ली 2015

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
8.	भभूल्य (नाटक)	रत्नकुमार सांभरिया	स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली 2018
9.	बाँग तथा अन्य लघुकथाएँ (लधु कथा संग्रह)	रत्नकुमार सांभरिया	विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 1996
10.	प्रतिनिधि लघुकथा शतक	रत्नकुमार सांभरिया	वाङ्मय प्रकाशन, जयपुर 2011

सहायक ग्रंथ

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
1	समाजद्रष्टा साहित्यकार रत्नकुमार सांभरिया	सं. डॉ. राकेश रायपुरिया, प्रण शुक्ला	दृष्टि प्रकाशन, जयपुर 2016
2	हिन्दी दलित लेखन एवं रत्नकुमार सांभरिया का साहित्य	डॉ. धूल चन्द मोना	श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली 2020
3	समाजद्रष्टा साहित्यकार रत्नकुमार सांभरिया – भाग-2	सं. डॉ. विवेक शंकर, डॉ. अनिता वर्मा	दृष्टि प्रकाशन, जयपुर 2020
4	दलित साहित्य अनुसंधान के आयाम	डॉ. भरत सगरे	दिव्या डिस्ट्रिब्यूटर्स 2011

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
5	दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ	ओमप्रकाश वाल्मीकि	राधाकृष्ण प्रकाशन 2013
6	हिन्दी साहित्य के दलित चेतना - अवधारणा एवं स्वरूप	डॉ. रश्मि चतुरवेदी	सरस्वती प्रकाशन 2014
7	समकालीन हिन्दी दलित साहित्य – एक विचार-विमर्श	सूरजपाल चौहान	वाणी प्रकाशन 2017
8.	हिन्दी मराठी दलित साहित्य – एक अध्ययन	डॉ. सादिक तांबोळी	विनय प्रकाशन 2017
9.	दलित साहित्य सामाजिक सरोकार	डॉ. वाय.सी. मेंढ़े	श्रीराम प्रकाशन 2015
10.	समकालीन हिन्दी नाटकों में पशु प्रतीक	डॉ. वसंत पुंजाजीराव गाडे	श्रीराम प्रकाशन 2014
11.	हिन्दी साहित्य में दलित चेतना	डॉ. ओमप्रकाश तिवारी	श्रीराधे प्रकाशन 2013
12.	दलित साहित्य: प्रकृति और संदर्भ	डॉ. सण्जय नवले डॉ. गिरीश काशिद	अमन प्रकाशन 2010
13.	हिन्दी दलित कहानी -विविध आयाम	डॉ. नारायण	निशा पब्लिकेशन 2014
14.	इक्कीसवीं सदी का दलित साहित्य	डॉ. भरत धोंडीराम सागरे	पूजा पब्लिकेशन 2014

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
15.	हिन्दी साहित्य में दलित चेतना	डॉ. जालिंदर इंगले	चंद्रलोक प्रकाशन 2014
16.	आधुनिक हिन्दी साहित्य – विविध परिदृश्य	डॉ. सण्जय नवले डॉ. पंडित बन्ने	निशा पब्लिकेशन 2013
17.	हिन्दी दलित साहित्य का विकास	डॉ. प्रमोद कोवप्रत	वाणी प्रकाशन 2016
18.	21वीं सदी के नाटकों में दलित चेतना	डॉ. सुरेश नामदेव तायडे	अतुल प्रकाशन 2014
19.	भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास - 1	डॉ. मोहनदास नैमिशराय	राधाकृष्ण प्रकाशन 2013
20.	दलित चिन्तन - अनुभव और विचार	डॉ. एन. सिंह	वाणी प्रकाशन 2015
21.	दलित साहित्य: विविध आयाम	डॉ. सुनीता साखरे	अमन प्रकाशन 2013
22.	दलित चेतना के संदर्भ में जगदीशचन्द्र एवं जोसेफ मेकवान के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. गोवर्धन बंजारा	ज्ञान प्रकाशन 2011
23.	दलित दर्शन की विचारिकी	बी. आर. विप्लवी	वाणी प्रकाशन 2016

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
24.	समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन	रजनी तिलक रजनी अनुरागी	स्वराज प्रकाशन 2011
25.	दलित साहित्य: एक मूल्यांकन	प्रो. चमनलाल	पूजा पब्लिकेशन
26.	मोहनदास नैमिशराय का साहित्य: एक मूल्यांकन	डॉ. सण्जय नवले डॉ. सादिक तांबोळी	विनय प्रकाशन 2016
27.	हिन्दी-गुजराती दलित साहित्य के विविध संदर्भ	डॉ. धीरज भाई वाणकर	ज्ञान प्रकाशन 2014
28.	उपन्यासकार सुशीला ठाकभौरे एवं नारी अस्मिता	संध्या दत्ता कदम	विनय प्रकाशन 2017
29.	अंतिम दशक की कहानियों में दलित नारी	डॉ. अमिता	अलका प्रकाशन 2014
30.	दलित-चिंतन की दिशाएँ	डॉ. सुरेश चन्द्र	क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स 2013
31.	दलित साहित्य और समसामयिक संदर्भ	डॉ. श्रवण कुमार मीणा	संजय प्रकाशन 2009
32.	दलित साहित्य और विमर्श के आलोचक	कँवल भारती	स्वराज प्रकाशन 2009
33.	दलित जीवन संघर्ष और स्वप्न	नितिन गायकवाड	अमन प्रकाशन 2010

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
34.	समकालीन साहित्य और दलित विमर्श	प्रो. संजय एल. मादार	आधार प्रकाशन 2011
35.	इक्कीसवीं सदी के साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. रमेश कुमार	श्री नटराज प्रकाशन
36.	दलित विमर्श	डॉ. धीरजभाई वणकर	ज्ञान प्रकाशन 2012
37.	आधुनिकता के आईने में दलित	अभय कुमार दुबे	वाणी प्रकाशन 2006
38.	हिन्दी दलित साहित्य संचयिता	प्रीति सागर	राजकमल प्रकाशन 2015
39.	भारतीय दलित साहित्य: परिप्रेक्ष्य	पुन्नीसिंह कमल प्रासाद राजेन्द्र शर्मा	वाणी प्रकाशन 2003
40.	हिन्दी एवं गुजराती दलित उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. एन.एस. परमार	चिंतन प्रकाशन 2016
41.	दलित विमर्श की भूमिका	कँवल भारती	वाणी प्रकाशन 2003
42.	दलित साहित्य (वार्षिकी)	जयप्रकास कर्दम	2005
43.	दलित पैन्थर भूमिका एवं आन्दोलन	डॉ. शरणकुमार लिंबाले	वाणी प्रकाशन 2017

क्र.सं.	ग्रंथ का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष
44.	दलित दृष्टि	गेल ओमवेत – अनुवाद: रमाणिका गुप्ता एवं अकील कैस	वाणी प्रकाशन 2011
45.	घुसबैठिए	ओमप्रकाश वाल्मीकि	राधाकृष्ण प्रकाशन 2016
46.	तलाश	जयप्रकाश कर्दम	विक्रम प्रकाशन 2005
47.	सलाप	ओमप्रकाश वाल्मीकि	राधाकृष्ण पेपरबैक्स 2016